४. निर्मल जिंदगी

पूरक पठन

अनूदित

अनुवादक–रमेश यादव

(पारंपारिक वाद्य के साथ पाँच–छह कलाकार मिलकर भारूड़ गाते हैं)

सभी एक साथ : सूरज उगा, प्रकाश आया, आड़ा डगर
आड़ा डगर और उसको मेरा नमस्कार ।

सूत्रधार : अरे... रे... रे... बिच्छू ने काटा **(डसा)** दैया रे दैया... बिच्छू ने काटा, अब मैं क्या करूँ .... बिच्छू ने काटा अब मैं क्या करूँ ... बिच्छू ने काटा, मैया रे मैया... बिच्छू ने काटा....

कोरस : अरे बिच्छू ने काटा, रे बिच्छू ने काटा, रे बिच्छू ने काटा..., हो !

साथी : महाराज, महाराज ये एकाएक क्या हुआ ?

सूत्रधार : काम, क्रोध, मद, मोह, गंदगी के बिच्छू ने काटा ऽ ऽ ऽ ऽ तम पसीने से अंग–अंग लथपथ, जान खा रही झटपट, मनुष्य का डंक अति दारुण

साथी : अच्छा–अच्छा अति ''दारू'' न

सूत्रधार : अरे दारू और डंक का यहाँ क्या संबंध भाई ... ? दारुण मतलब भयंकर

साथी : भयंकर मतलब तो अभ्यंकर क्या ,

सूत्रधार : अभ्यंकर का कोई संबंध नहीं, अरे अभ्यंकर नहीं, भयंकर मतलब अति भयंकर

साथी : अति भयंकर माने ,

सूत्रधार : खूब भयंकर

साथी : और खूब भयंकर माने ?

सूत्रधार : बड़ा भयंकर

साथी : और बड़ा भयंकर माने

सूत्रधार : तुम्हारे दाँत तोड़ने के बाद जितनी पीड़ा होगी उतना भयंकर

साथी : बाप रे... !

सूत्रधार : मनुष्य डंक अति दारुण, डस लिया समाज को उसने

साथी : उसने मतलब उस निचले मोहल्ले के गंगी ने ?

सूत्रधार : गंगी का यहाँ क्या संबंध !

साथी : तो क्या रंगी ने ?

सूत्रधार : किसी का यहाँ कोई संबंध नहीं, उसने मतलब... उस इंगली ने

साथी : महाराज, महाराज इंगली मतलब ?

सूत्रधार : बड़े बिच्छू का जहर !

परिचय

जन्म : ९ अक्तूबर १९६२ मुंबई (महाराष्ट्र)

परिचय : आपकी कहानियाँ, कविताएँ, समीक्षा, लेख, साक्षात्कार इत्यादि विविध पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं । आपने अनुवाद, बालसाहित्य और मराठी लोक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : लोकरंग–महाराष्ट्र की लोक कलाएँ एवं संस्कृति–एक परिचय, शाहिरीनामा–शाहिरी महाराष्ट्र की लोक गायन परंपरा, महक फूल–सा मुसकाता चल (बालकविता संग्रह) बिंब–प्रतिबिंब, वैकल्य (अनूदित उपन्यास) कविता की पाठशाला (बालसाहित्य) थिरकणारे पंख (अनुवाद) आदि ।

पद्य संबंधी

भारूड़ : भारूड़ मराठी साहित्य की एक विधा है । इसके द्वारा धार्मिक और नैतिक मूल्यों की बातें सामान्य लोगों तक पहुँचाई जाती हैं । मराठी की यह साहित्यिक विधा प्रथमतः हिंदी में प्रस्तुत की जा रही है । संत एकनाथ जी के भारूड़ पर आधारित इस रचना का आप आनंद उठाएँ ।

प्रस्तुत भारूड़ में मनुष्य को षड्विकारों से दूर रहने का संदेश दिया है । मनुष्य को स्वस्थ जीवन और समाज के लिए बुरी आदतों को त्यागने के लिए प्रेरित किया गया है ।

साथी : कद से कितना बड़ा ?

सूत्रधार : तेरे जितना ... मनुष्य इंगली अति दारुण, डस लिया समाज को उसने, पूरे शरीर और समाज मन में वेदना उसकी ....

साथी : बिच्छू के जहर पर उपाय क्या महाराज ?

सूत्रधार : धुम्रपान से बचो, गंदगी दूर भगाओ, स्वच्छता अपनाओ, अपना तन-मन, पास-पड़ोस और परिसर को साफ सुथरा ऽऽऽऽ रखो, हटेगा कचरा तो मिटेगी गंदगी,बनेगा सुंदर वातावरण, निर्मल जिंदगी, तमाखू खाना छोड़ो, तमो गुण छोड़ो,

साथी : क्या बोला ! क्या बोला ! इस बिच्छू के जहर पर उपाय ... तमो गुण छोड़ो ? तमो गुण मतलब क्या महाराज ?

सूत्रधार : घमंड से यदि छाती का गुब्बारा फूल गया हो तो आलपिन लगाकर थोड़ी-सी हवा कम करो, सत्व गुणों का तिलक करो, स्वछता के मंत्र का जाप करो, फिर देखो बिच्छू का जहर उतरेगा झर-झर, झर-झर ऽऽऽऽ

सूत्रधार : सत्य का उतारा लेकर

साथी : अरे लाया क्या ?

सूत्रधार : सत्य का उतारा लेकर, दूर किया सारा तमो गुण, समय आ गया सुधरो, सुधरो, सुधारो भूल ऽऽऽऽ रह गई थोड़ी-सी जो कसर तो शांत किया जनार्दन ने पुंडलीक वरदा, हरि विठ्ठल ऽऽऽऽ श्री ज्ञानदेव, तुकाराम पंढरीनाथ महाराज की जय !!

—०—

पठनीय

'महाराष्ट्र का लोकसाहित्य' से संबंधित पुस्तकें अंतरजाल की सहायता से पढ़िए ।

लेखनीय

किसी जीवनमूल्य के विषय पर संवाद लेखन कीजिए ।

संभाषणीय

यह भारूड़ शालेय समारोह में प्रस्तुत कीजिए ।

आसपास

अंधविश्वास से दूर रहने का संदेश देने वाले घोषवाक्य तैयार कीजिए ।

श्रवणीय

संत एकनाथ महाराज का कोई भारूड़ यू ट्यूब पर सुनिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) आकृति :

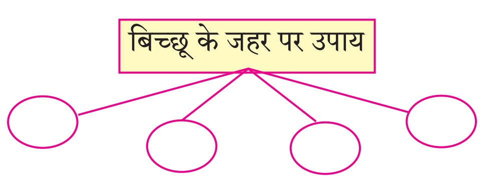

(ख) भारूड़ में आए संतों के नाम ।

पाठ से आगे

'महाराष्ट्र की लोकधारा' यह मंचीय कार्यक्रम देखिए ।

रचना बोध

....

....

....